वर्धमान जीवन कोश भाग-३ (फोल्डर नं. ०१९७५)

संपादक – मोहनलाल बाँठिया, श्रीचंद चोरडिया

मुख्य टाइटल
समर्पण
संकलन-संपादन में प्रयुक्त ग्रन्थों की संकेत सूची
आशीर्वचन
जैन वाङ्मय का दशमलव वर्गीकरण
०३ जीव द्वार का वर्गीकरण
९२ जीवनी का वर्गीकरण
भूमिका
प्रकाशकीय
प्रस्तावना
दो शब्द
विषय सूची
वर्धमान के चतुर्विध संघ का निरूपण ---------- १
भगवान के चतुर्विध संघ के प्रमाण का निरूपण ---------- १
भगवान महावीर को अरिहंत पद में ग्रहण ---------- १
तीर्थंकर पद अन्तर ----------२
वर्धमान और स्प्रतिक्रमण सहित पाँच महाव्रत ----------२
वर्धमान तीर्थंकर तथा पूर्वगत श्रुत ----------२
जिनांतर में कालिक श्रुत ----------३
भगवान महावीर के तीर्थ में तीर्थंकर गोत्र उपार्जन करनेवाले जीव ----------३
पंचम आरा और भगवान का परिनिर्वाण ---------- ४
भगवान के परिनिर्वाण के बाद-भगवान के जन्म नक्षत्र पर भष्मराशि महाग्रह का आगमन --------- ४
भगवान के परिनिर्वाण के समय नव मल्लकीवंश और... ---------- ५
भगवान महावीर के परिनिर्वाण के बाद कुंथु ादि जीवों की समुत्पत्ति होने से....---------- ५
तीर्थ कब तक चलेगा ---------- ५
केवलज्ञान के उत्पन्न होने के बाद के अतिशय ---------- ६
वर्धमान महावीर की अवगाहना ---------- ६
महाराज की पदवी ---------- ६
त्रिपृष्ठ वासुदेव का नरक-गमन ---------- ७
वर्धमान का समय काल ---------- ७
वर्धमान का कुमारकाल ---------- ७
भगवान महावीर की अंगुल का माप---------- ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान के माता-पिता की उपासना तथा परभव काल ----------८
वीर स्तुति – शक्रेन्द्र द्वारा ---------- ९
भगवान महावीर के समकालीन राजा ---------- १०
वर्धमान-एक विवेचन ---------- १०
वर्धमान के साधुओं का विवेचन ----------१३
औधिक श्रमणों का विवेचन ----------१३
औधिक निर्ग्रन्थों का विवेचन ---------- १५
निर्ग्रन्थों की ऋद्धइ ---------- १५
निर्ग्रन्थों का तप ---------- १६
औधिक स्थविरों का विवेचन ---------- १७
औधिक अनगारों का विवेचन ---------- १९
अनगारों का अप्रतिबंध विहार ---------- २०
अनगारों के गुण ---------- २२
अनगारों की तपश्चर्या ---------- २२
अनगारों के विशेष गुण ---------- २३
संसार-सागर से तैरना ---------- २४
भगवान महावीर के तेपन्न अनगार की एक वर्ष की श्रमण-पर्याय ---------- २६
भगवान महावीर के समकालीन प्रत्येक बुद्ध---------- २६
अष्ट राजा दीक्षित---------- २६
साधुओं की एक कड़ी ---------- २७
गण और गणधर ---------- २७
भगवान की शासन-सम्पदा ---------- २८
सौधर्म से ग्रैवेयक तक-देवों में उत्पन्न साधुओं की संख्या ---------- २८
विशिष्ट साधु-संख्या ---------- २८
शिक्षक साधु की संख्या ---------- २९
भगवान की शिष्य परम्परा ---------- २९
तीन केवलज्ञानी ---------- २९
चतुर्दश पूर्वधारी ---------- २९
ग्यारह अंग-दस पूर्वों के ज्ञाता ---------- २९
ग्यारह अंगधारी ---------- ३०
गणधर के समान ज्ञानी ---------- ३०
आचारांग के धारी थे ---------- ३०
भगवान महावीर की शिष्य परम्परा ----------३१
अन्तिम देशना के पश्चात् ----------३१
भगवान की शिष्य परम्परा ----------३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधु संख्या ----------३१
ऋषियो की साधुओं की ---------- ३२
साध्वी संख्या ---------- ३३
आर्यिकाएँ ---------- ३४
परिनिर्वाण प्राप्त-साधु साध्वियाँ ---------- ३४
कितने शिष्य सिद्ध होंगे ---------- ३४
अन्तक्रिया ---------- ३५
जिन केवली ---------- ३५
चतुर्दश पूर्वधर ---------- ३६
वादी संख्ा ---------- ३७
वैक्रियलब्धिधारी ---------- ३८
अनुत्तरोपातिक सम्पदा ---------- ३९
अवधिज्ञानी ---------- ३९
मनःपर्यवज्ञानी ---------- ४०
श्रावक कितने थे ---------- ४१
श्राविका कितनी थी---------- ४१
तिर्यंच भी श्रावक थे ---------- ४२
भगवान महावीर के नौ गण ---------- ४३
भगवान महावीर की सेवा में यक्षिणी ---------- ४५
असंख्यात देव-देवियां, संख्यात तिर्यंच ---------- ४५
दीक्षा वृक्ष ---------- ४५
दीक्षा के समय-तप ---------- ४६
दीक्षा परिवार---------- ४६
स्वप्न ---------- ४६
गोत्र वंश ---------- ४६
तीर्थंकरों का विवाह ---------- ४७
गृहवास के समयज्ञान ---------- ४७
ज्ञान-दीक्षा के समय ---------- ४७
तीर्थंकरों के पूर्वभव का श्रुतज्ञान ---------- ४७
तीर्थंकरों के जन्म और मोक्ष के आरे ---------- ४७
भव ---------- ४८
वर्धमान तीर्थंकर के २७ बोलों का यन्त्र ---------- ४८
भगवान महावीर के समय में भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा---------- ५०
बौधिक अनगार ---------- ५०
सर्वज्ञ अवस्था में ल- पार्श्वपत्य अणगारों से सम्पर्क ---------- ५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालस्यवेषिपुत्र अणगार का चाातुर्याम से पंचयाम धर्म-स्वीकार ---------- ५३
गांगेय अणगार ---------- ५५
पार्श्वपत्य केशीकुमार श्रमण ---------- ५६
केशीकुमार श्रमण ---------- ५७
वैशालिक श्रावक पिंगल निर्ग्रन्थ ---------- ५७
मुनिचन्द्राचार्य और वर्द्धनसूरि ---------- ५८
नन्दीषेण ---------- ६०
प्रगल्मभा और विजय नाम शिष्या ---------- ६१
उदक पेढाल पुत्र-भावितीर्थंकर ---------- ६२
चित्त सारथि ---------- ६३
गौशालक के शिष्यों के तप ---------- ६४
साधुओं की संख्या का विवरण ---------- ६४
गण और गणधर ---------- ६७
तीर्थोत्पत्ति ---------- ६७
श्रमण भगवान महावीर की जीवन-झांकी-धर्म देशना ---------- ६८
भगवान महावीर और आगम---------- ७०
भगवान महावीर और पंच महाव्रत की साधना ---------- ७२
परिषह ---------- ७५
स्वयंबुद्ध ---------- ७५
उपधि तथा लिंग ---------- ७५
भगवान का रोग और लोकोपवाद ---------- ७६
रेवती गाथापत्नी ---------- ७७
भगवान का आहार ---------- ७९
बाल्यभाव में आहार ---------- ७९
केवली अवस्था में आहार ---------- ७९
भगवान महावीर का श्रमणों से प्रश्न ---------- ८०
भगवान महावीर और भावी तीर्थंकर महापद्म ----------८१
महापद्म की प्ररूपणा ---------- ८२
भगवान महावीर के विशिष्ट सिद्धांत---------- ८६
चित्त समाधि ---------- ८६
शरीर निर्गत तेजोलेश्या की शक्ति ---------- ८८
स्वयं की तेजोलेश्या से गौशालक भस्मसात---------- ८९
स्कंदक परिव्राजक ---------- ८९
ग्यारहवें चातुर्मास के बाद की घटना ---------- ९०
भगवान को वंदनार्थ जाने का उदाहरण ---------- ९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जनमानस का आगमन ---------- ९१
नंदिवर्द्धन का आगमन ---------- ९४
श्रेणिक राजा और चेलणादेवी---------- ९४
जमाली आदि ---------- ९६
जमाली का विहार ---------- १०६
भगवान महावीर और कोणिक राजा की भगवद् भक्ति ---------- १०७
भगवान महावीर और धर्म-संदेश वाहक ---------- १०८
कूणिक का भगवान की वंदन ---------- १०९
चम्पानगरी में भगवान महावीर का पदार्पण तथा लोगों में उनकी चर्चा ---------- १११
मनुष्य परिषद् ----------११२
कूणिक का भगवान ्को अभिवंदन करने के लिए जाना ---------- ११४
चम्पा में भगवान का उपदेश ---------- १२०
भगवान से धर्म सुनकर-आगार-अनागार धर्म ग्रहण किया ----------१२१
भगवान की धर्मदेशना से प्रभावित होकर सुभद्रा प्रमुख देवियों को श्रद्धा होना ---------- १२३
ऋषभदत्त और देवानंदा ---------- १२४
देवानंदा के स्तन से दुग्धधारा बह निकली ---------- १२७
राजगृह में पदार्पण की सूचना---------- १३३
हस्तिनापुर की परिषद् ---------- १३४
युगान्तरकृतभूमि-पर्यायान्तरकृतभूमि ----------१३
विविध संकलन ---------- १३५
भगवान महावीर और अच्छेरे-आश्चर्य ---------- १३५
गणधर गौतम-एक प्रसंग ---------- १४१
गौतम का अष्टापद पर आरोहण ---------- १४२
पाँच सौ तापसों ने गौतम स्वामी से दीक्षा ग्रहण की ---------- १४६
गौतम स्वामी के द्वारा दीक्षित तापसों को कैवल्यज्ञान ---------- १४७
गौतम का स्नेह केवलज्ञान में बाधक ---------- १४७
जंबूस्वामी-एक प्रसंग ---------- १४९
इस अवसर्पिणी काल के जंबूस्वामी अन्तिम केवली ---------- १५०
सर्वस्व अवस्था के वर्धमान स्वामी के विहार स्थल ---------- १५१
सुरभिपुर पधारे ---------- १५१
सुरभिपुर से विहार कर पोतनपुर पधारे ---------- १५१
साकेतनगर में---------- १५२
हस्तिनापुर में ---------- १५२
उल्लुकतीरनगर में ---------- १५२
मृगाग्राम में ---------- १५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिमताल नगर में ---------- १५३
साहंजनी नगरी में ---------- १५४
पाटलिषंड नगर में ---------- १५४
रोहीतक नगर में ---------- १५४
वर्धमानपुर नगर में ---------- १५५
आमलकल्पानगरी में ---------- १५५
राजगृह से कृतंगला नगरी पदार्पण ---------- १५६
वाणिज्य ग्राम में ---------- १५७
भगवान महावीर के विहार स्थल का तीसवाँ वर्ष ---------- १५९
मिथिला नगरी में ---------- १६०
अन्यान्य देशों मं विहार ---------- १६१
तीर्थंकर काल का प्रथम वर्ष का विहार ---------- १६१
पोलासपुर नगर से विहार ---------- १६१
देश, पर्वत, नगरादि में विहार ---------- १६१
अन्यान्य ग्राम-नगर आदि में विहार ---------- १६२
उदायन राजा की दीक्षा के बाद विहार ---------- १६२
राजगृह से अन्यत्र विहार ---------- १६३
दर्शाणनगर से अन्यत्र विहार ---------- १६४
राजगृह से अन्यत्र विहार ---------- १६४
राजगृह से अभयकुमार की दीक्षा के बाद विहार ---------- १६४
भगवान का चम्पा से विहार ---------- १६४
वाणिज्यग्राम से भघवान का विहार ---------- १६४
आनन्द श्रावक के अवधइज्ञान के पश्चात् भगवान का वाणिज्यग्राम से विहार ---------- १६५
पोलासपुर पदार्पण ---------- १६५
कौशाम्बी पदार्पण ---------- १६६
सर्वज्ञ अवस्था में ---------- १६७
मृगावती की दीक्षा के समय भगवान का कौशाम्बी में पदार्पण ---------- १६७
कौशाम्बी में पुनः आगमन-५५ वें वर्ष में ---------- १६८
श्रावस्ती में पदार्पण ---------- १६९
शंख श्रावक के समय में ---------- १६९
कौशाम्बी नगरी से श्रावकी नगरी पदार्पण – उनतीसवां वर्ष ---------- १६९
आलंभिया नगरी में---------- १६९
ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक के समय में ---------- १७०
काशी नगरी-वाराणसी में---------- १७२
राजगृह नगरी से पृष्ठ चम्पा की ओर विहार ---------- १७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चम्पानगरी में भगवान का पदार्पण---------- १७४
चम्पानगरी की ओर विहार---------- १७६
चम्पानगरी में रथमूसल संग्राम के बाद---------- १७६
संघ से अलग हुआ जमाली-चम्पानगरी में आया तब भगवान का चम्पानगरी में पदार्पण --------- १७९
जमाली-भगवान के शासन से अलग होकर फिर भगवान् के चम्पानगरी में दर्शन किये ---------- १७९
पृष्ठ चम्पा से चम्पा की ओर विहार ---------- १७९
सुघोष नगरमें ---------- १८०
महापुर नगर में ---------- १८०
कनकपुर नगर में ---------- १८०
सौगंधिका नगरी में----------१८१
विजयपुर नगर में ----------१८१
वीरपुरनगर में ----------१८१
वीतभय नगर में पदार्पण ----------१८१
भगवान महावीर का दर्शणनगर से विहार ---------- १८२
मेंढिकग्राम-श्रावस्ती से विहार ---------- १८३
ऋषभपुर नगर में ---------- १८४
मथुरानगरी में ---------- १८४
राजगृही में ---------- १८५
काम्पिल्यपुर नगर में---------- १८५
शौरिकपुर नगर में ---------- १८६
हस्तिशीर्ष नगर में ---------- १८६
हस्तिशीर्ष नगर से अन्यत्र विहार ---------- १८७
काकंदीनगरी में ---------- १८७
कुंडग्रा-ब्राह्मण कुंडग्राम-क्षत्रिय कुंडग्राम में ---------- १८८
अपापा के बाद ---------- १९०
देवानन्दा की दीक्षा के बाद ---------- १९०
मौका नगरी में ---------- १९०
तुंगिया नगरी के श्रावकों के समय-काल में ---------- १९१
राजगृह नगर में ---------- १९१
मेघकुमार दीक्षित हुआ उस वर्ष ---------- १९१
राजगृह नगरी में पदार्पण ---------- १९१
राजगृह के वैभारगिरि पर पदार्पण ---------- १९५
पोतनपुर से राजगृह ---------- १९५
कालोदाई आदि के समय में ---------- १९५
राजगृही में पदार्पण---------- १९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शालिभद्र-धन्यमुनि के साथ प्रभु राजगृह पदारे ---------- १९९
रोहणीय चोर था-उस समय राजगृह में पदार्पण ---------- १९९
विपुलाचल पर्वत पर ---------- २००
ग्रामानुग्राम विहार करते हुए भगवान राजगृह के बाहर स्थित विपुलाचल पर्वत पधारे ---------- २०१
जृंभक ग्राम से विहार (कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति के बाद प्रथम विहार० ---------- २०२
अपापा नगरी से ---------- २०३
अन्तिम-अपापा नगरी ---------- २०३
भगवान का विपुलाचल से विहार करते हुए पावापुरी आगमन ---------- २०३
भगवान का अन्तिम विहार-पावापुरी ---------- २०४
अन्तिम विहार-पावापुरी ---------- २०५
भगवान महावीर के समीप देवों का आगमन ---------- २०५
सुर्याभदेव के आभियोगिक देवों का ---------- २०५
सूर्याभदेव का---------- २०६
गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों को सूर्याभदेव द्वारा नाटक दिखाने की ईच्छा – निवेदन ---------- २०९
भगवान भगवान महावीर को अवस्थान स्थित देवों का वंदन ---------- २१७
ईशानेन्द्र का ---------- २१८
सानतकुमारेन्द्र तता माहेन्द्र का ग्यारहवें चातुर्मास के बाद की घटना ---------- २१९
भोगपुर नगर में ---------- २२०
भगवान की छद्मस्थावस्था की घटना विशेष ---------- २२०
पूर्णभद्र और मणिभद्र ---------- २२०
चम्पा में बारहवें चातुर्मास के समय में ---------- २२०
वैशाली में शक्रेन्द्र का ागमन – छठ्ठे चातुर्मास के पूर्व ---------- २२१
जृंभिक ग्राम में-शक्रेन्द्र का ---------- २२१
हस्तिशीर्ष नगर में इन्द्र का आगमन ---------- २२२
छद्मस्थावस्था में थूणा सन्निवेश में भगवान के पास इन्द्र का आगमन ---------- २२२
अपापा में शक्रेन्द्र का आगमन ---------- २२४
शक्रेन्द्र का परिवार सहित विपुलाचल पर्वत पर... ---------- २२४
दर्दुर देव का आगमन ---------- २२५
चम्पानगरी में देवों का आगमन ---------- २२६
असुरकुमारों का ---------- २२६
देवों का शरीर और शृंगार---------- २२६
नागकुमार यावत् स्निंत कुमारों का ---------- २२८
वाणव्यंतर देवों का ---------- २२८
ज्योतिष्क देवों का ---------- २२९
वैमानिक देवों का ---------- २३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुसुमार नगर में चमरेन्द्र का आगमन ---------- २३१
विभिन्न देवों का आगमन.... ---------- २३१
ग्यारहवें चातुर्मास-वैशाली में ---------- २३२
हरि नामक विद्युतकुमार के इन्द्र का आगमन ---------- २३२
श्रावस्ती में शक्रेन्द्र का आगमन ---------- २३४
केवलज्ञान-केवलदर्शन की उत्पत्ति के अवसर पर ---------- २३४
ज्योतिषी देव का इन्द्र-चन्द्रदेव का आगमन ---------- २३४
ज्योतिषी देव का इन्द्र सूर्यदेवका ---------- २३५
ज्योतिषी देव-शुक्र महाग्रह का ---------- २३६
सौधर्म देवलोक से बहुपत्रिका देवी का ---------- २३६
सौधर्म देवलोक से पूर्णभद्र देवका ---------- २३६
सौधर्म देवलोक से मणिभद्र देव का ---------- २३८
सौधर्म देवलोक से श्रीदेवी का ---------- २३८
चमरेन्द्र का आवागमन ---------- २३९
भगवान महावीर के निकट चमरेन्द्र का आवागमन ---------- २३९
शक्रेन्द्र वज्र से भयभीत बना हुआ चमरेन्द्र का आवागमन ---------- २४०
चमरेन्द्र का आगमन ६४ हजार सामानिक देवों के साथ ---------- २४१
वज्र को ग्रहण करने के लिए आवागमन ---------- २४२
लोकांतिक देवों का सम्बोधन हेतु-आगमन ---------- २४४
महाशुक्र विमानवासी आमायी सामानिक देवों का---------- २४४
महाशुक्र देवलोक के महासर्ग विमान से दो देवों का ---------- २४५
भगवान महावीर के समय के देव विशेष ---------- २४६
काली देवी ---------- २४६
राजी देवी ---------- २४८
शुंभा ---------- २४९
इला देवी ---------- २४९
कमला देवी-पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी ---------- २४९
सूरप्रभा देवी ---------- २५०
चन्द्रप्रभा देवी ---------- २५०
पद्मावती देवी ---------- २५१
कृष्णादेवी ---------- २५१
भगवान महावीर के सम-सामायिकी घटना ---------- २५१
परिषद् में श्रेणिक-चेल्लणादेवी को देखकर साधु-साध्वियों द्वारा निदान ---------- २५१
भगवान ने मनोस्थिति को जाना ---------- २५३
नववां निवान कर्म---------- २५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निदान रहित संयम का फल ---------- २५६
भगवान के निदान व अनिदान रूप.... ---------- २५७
पुरुषों के कष्टों को देखकर स्त्री जन्म को अच्छा समझकर...---------- २५८
निदान कर्म करने वाले भिक्षु के स्त्री बनने का अधइकार ---------- २५८
निदान-कुमारों की ऋद्धइ को देखकर... ---------- २५९
कुमार के धर्म सुनने की अयोग्यता का वर्णन.... ---------- २६०
निर्ग्रन्थी के किसी सुन्दर युवती को देखकर... ---------- २६१
द्वितीय निदान ---------- २६१
निर्ग्रन्थी का निदान कर्म करके फिर देवलोक में... ---------- २६१
निर्गन्थीं के द्वारा कृत निदान कर्म का फल ---------- २६२
निदान कृत कुमारी की यौवनावस्था और उसके विवाह का वर्णन ---------- २६२
धर्म के श्रवण करने की अयोग्यता और उसका फल ---------- २६३
तीसरा निदान ---------- २६३
साधु ने किसी सुखी स्त्री को देखकर निदान कर्म.... ---------- २६३
धर्म सुनने की अयोग्यता और उसके फल का विवेचन ---------- २६४
छठा निदान कर्म ---------- २६४
निदान का फल ---------- २६५
धर्म सुनने की अयोग्यता और उसके फल का विवेचन ---------- २६५
अन्यतीर्थियों और निदान कर्म का फल ---------- २६५
सातवाँ निदान---------- २६६
श्रावक के धर्म का विवेचन ---------- २६८
आठवाँ निदान ---------- २६८
स्त्री को धर्म सुनने की अयोग्यता और उसका फल ---------- २७०
चतुर्थ निदान ---------- २७१
निर्ग्रन्थी का कुमारों को देखकर निदान कर्म का संकल्प करना ---------- २७१
स्त्री को देखकर अन्य लोगों की कामना... ---------- २७१
पुरुष के सुखों के अनुभव करने की इच्छा ---------- २७२
पुरुष बनकर सुख भोगने और धर्म सुनने की अयोग्यता का वर्णन ---------- २७२
मनुष्य के भोगों की अनित्यता का वर्णन---------- २७३
देवलोकों के काम भोगों का वर्णन ---------- २७३
देवलोकों के सुखों का वर्णन... ---------- २७४
निह्नववाद ---------- २७४
बहुरतवाद ---------- २७४
जीव प्रादेशिक ---------- २७५
अव्यक्तिक ---------- २७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुच्छेदिक ---------- २७७
द्वैक्रिय ---------- २७७
त्रैराशिक भगवान् महावीर के निर्वाण के ५४४ वर्ष पश्चात्.... ---------- २७८
अबद्धिक ---------- २७९
चार्ट सात निह्नवों का ---------- २८१
भगवान् महावीर और निह्नववाद ---------- २८१
प्रवचन निह्नव ---------- २८१
कूणिक और चेटक का युद्ध ---------- २८३
हल्ल-विहल्ल कुमार का उय्ध ---------- २८४
हल्ल-विहल्ल का चारित्र ग्रहण ---------- २८६
कूणिक की खठोर प्रतिज्ञा ---------- २८७
रथमूसल संग्राम का एक प्रसंग ---------- २८८
कालकुमार ---------- २८९
चमरेन्द्र से रथमुसल संग्राम को विकुर्वित किया ---------- २९१
महासिला कंटक संग्राम ---------- २९२
चमरेन्द्र ने महाशिला-कंटक-संग्राम को विकुर्वित किया ---------- २९५
सुर्याभदेव द्वारा नाटक---------- २९६
सूर्याभदेव-अभिषेकोत्सव ---------- ३०८
भगवान् के सम्बन्ध में प्रवाद ---------- ३२०
बौद्ध भिक्षु का प्रवाद तथा आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२०
बौद्ध भिक्षु का प्रवाद ---------- ३२०
आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२१
ब्राह्मणों का प्रवाद ---------- ३२३
आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२३
सांख्य का प्रवाद ---------- ३२४
आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२४
हस्तितापस का प्रवाद---------- ३२५
आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२५
गोशालक का प्रवाद तथा आर्द्रकुमार का उत्तर ---------- ३२७
पार्श्वपत्यी अणगार ---------- ३३१
भगवान महावीर के समय के व्यक्ति विशेष ---------- ३३५
एक कुष्ट व्यक्ति का देव का आगमन ---------- ३३५
भगवान् महावी के समकालीन प्रत्येक बुद्ध की कथाएँ ---------- ३४६
करकंडु-प्रत्येक बुद्ध ---------- ३४६
दुर्मुख राजा ---------- ३४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमी राजा ---------- ३४९
नग्गई राजा ---------- ३५१
कालोचित्त कियायां केशिगणधर कथा ---------- ३५२
भगवान् महावीर की सर्वज्ञावस्था और गोशालक ---------- ३५६
जिनप्रलापी गोशालक का रोष ---------- ३५६
गोशालक का आनंद निर्ग्रन्थ से वार्त्तालाप ---------- ३५९
आनन्द अणगार का भगवान् के पास आना ---------- ३६१
श्रमण और श्रमण भगवंत का तप तेज ---------- ३६२
भगवान् का आदेश-तीर्थंकर काल ---------- ३६३
गोशालक का आगमन ---------- ३६४
गोशालक को सही स्थिति बताना ---------- ३६५
गोशालक की तेजोलेश्या से-दो साधुओं का पंडित मरण ---------- ३६६
सर्वानुभूति ---------- ३६६
सुनक्षत्र मुनि का हनन-पंडित मरण ---------- ३६८
गोशालक द्वारा भगवान के वचनों का अनादर ---------- ३६९
भगवान पर गोशालक द्वारा छोड़ी गई तेजोलेश्या वापस गोशालक पर पडी ---------- ३७०
अपनी तेजोलेश्या से पीड़ित गोशालक से भगवान् की वार्त्ता ---------- ३७१
भगवान् महावीर और गोशालक के सम्बन्ध में जनचर्चा ---------- ३७२
श्रमण निर्ग्रन्थों को गोशालक के साथ वार्त्तालाप करने का आदेश ---------- ३७३
गोशालक-श्रमण-निर्ग्रन्थों द्वारा धर्मचर्चा में ि◌रुत्साह ---------- ३७४
अपनी तेजोलेश्या से प्रतिहत गोशालक को छोड़कर उसके कुछ साधु भगवान् के पास आये ------ ३७५
गोशालक की दुर्दशा ---------- ३७६
गोशालक की तेज शक्ति और दाम्भिक चेष्टा ---------- ३७७
गोशालक द्वारा फेंकी गई तेजोलेश्या से भगवान् के शरीर में दाह ज्वर ---------- ३७८
सिंह अणगार का शोक और रेवती गाथापत्नी ---------- ३७८
भगवान् का राग और लोकोपवाद ---------- ३८०
सिंह अणगार की सान्त्वना ---------- ३८१
सिंह अणगार रेवती के घर ---------- ३८३
रेवती की आश्चर्य और औषधि दान ---------- ३८४
तीर्थंकर काल भगवान के रोग का उपशमन ---------- ३८५
भगवान महावीर और सिंह अणगार ---------- ३८५
गोशालक-एक प्रसंग ---------- ३८६
भगवान से गोशालक का पृथक्करण-अनेक यातनाएँ ---------- ३८७
छः दिशाचार ---------- ३८९
गोशालक-एक प्रसंग ---------- ३८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोशालक की गति---------- ३९४
गोशालक और सद्दालपुत्र श्रमणोपासक ---------- ३९४
गोशालक – वाद-विवाद करने में समर्थ नहीं सद्दालपुत्र को आह्वान ---------- ३९५
गोशालक द्वारा भगवान् महावीर का गुणकीर्तन ---------- ३९६
गोशालक के प्रश्न और आर्द्रक का उत्तर ---------- ४००
जंबू स्वामी ---------- ४०५
पूर्व भव---------- ४०५
जंबू स्वामी के प्रसंग में ---------- ४०६
जंबू स्वामी का विवाह ---------- ४०६
गृह में चोर-प्रवेश ---------- ४०७
जंबू स्वामी और विद्युच्चोर के बीचत युक्तियों औऱ दृष्टांतो द्वारा वाद-विवाद ---------- ४१०
दृष्टांत द्वारा वाद-विवाद चालू ---------- ४१२
जंबू स्वामी को केवलज्ञान प्राप्ति ---------- ४१४
जन्मकूपका दृष्टांत जंबूस्वामी तथा विद्युच्चोर की प्रव्रज्या ---------- ४१५
वर्धमान महावीर-पूर्वभव प्रसंग-उत्तर पुराण से ---------- ४१६
चातुर्मास ---------- ४२३
विहार और आवास स्थान ---------- ४२४
संकलन-सम्पादन-अनुसंधान में प्रयुक्त ग्रंतो की सूची ---------- ४२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org